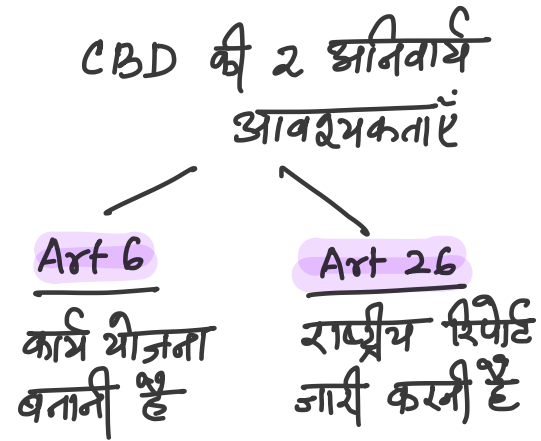


# भारत की जैव विविधता कार्य योजना, एनबीटी और छठी राष्ट्रीय रिपोर्ट



## राष्ट्रीय जैव विविधता कार्य योजना (NBAP)

सीबीडी के अनुच्छेद 6 और अनुच्छेद 26 के अनुसार, राष्ट्रीय जैव विविधता कार्य योजना (NBAP) या समान दस्तावेज़ तैयार करना और राष्ट्रीय रिपोर्ट्स जमा करना दो अनिवार्य कार्य हैं।

भारत ने 1999 में अपनी प्रारंभिक जैव विविधता रणनीति बनाई, जिसे 2008 में राष्ट्रीय जैव विविधता कार्य योजना (NBAP) के रूप में संशोधित और अद्यतन किया गया। इसका उद्देश्य 2006 की राष्ट्रीय पर्यावरण नीति के साथ जैव विविधता एजेंडा को संरेखित करना है।

**NBAP**

= National Biodiv. Action Plan

**NBT = National Biodiversity Target**

1999 → 2008 → 2014

2011-2020 की जैव विविधता के लिए आइसी रणनीतिक योजना को शामिल करने के लिए NBAP को 2014 में और भी अपडेट किया गया।

अब इसे **NBSAP** (National Biodiversity Strategic Action Plan) कहते हैं।

↳ वर्तमान में जागू

इसके 12 मुख्य लक्ष्य नीचे दिए गए हैं।

**KHAN SIR**

## NBSAP के तहत भारत के 12 बायोडायवर्सिटी टारगेट

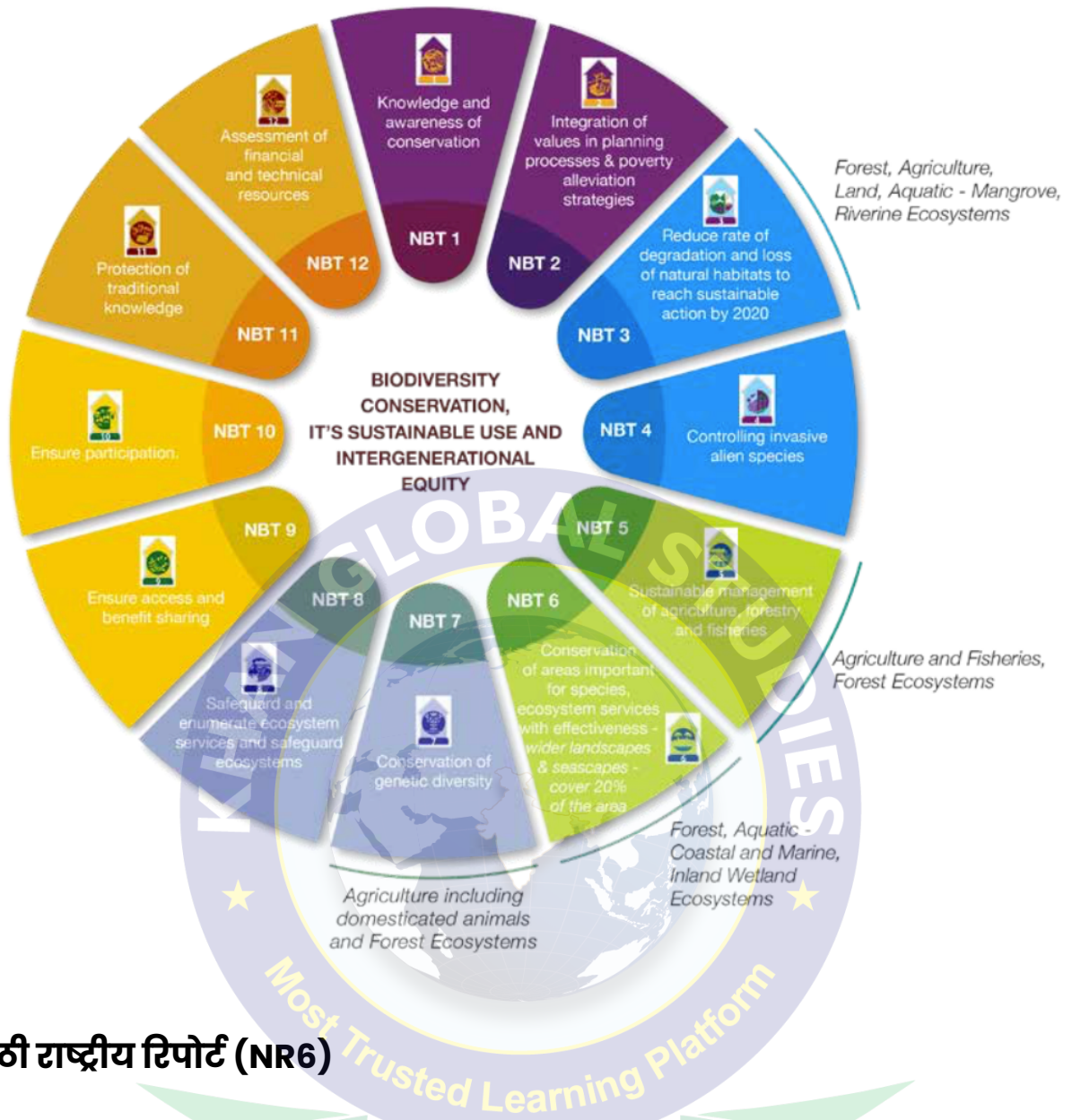
- एनबीटी 1: 2020 तक जैव विविधता और इसके सतत संरक्षण के बारे में जन जागरूकता बढ़ाना

- एनबीटी 2: 2020 तक आर्थिक विकास की योजना बनाने और गरीबी कम करने की रणनीतियों में जैव विविधता मूल्यों को शामिल करना
- एनबीटी 3: 2020 तक प्राकृतिक आवासों की रक्षा के लिए रणनीति विकसित और कार्यान्वित करना
- एनबीटी 4: 2020 तक आक्रामक विदेशी प्रजातियों और उनके प्रभाव को प्रबंधित करना
- एनबीटी 5: 2020 तक कृषि, वानिकी और मत्स्य पालन में सतत प्रथाओं को अपनाना
- एनबीटी 6: 2020 तक भारत के 20% से अधिक क्षेत्र को कवर करते हुए महत्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र का संरक्षण करना
- एनबीटी 7: 2020 तक पौधों, जानवरों और महत्वपूर्ण प्रजातियों की आनुवंशिक विविधता को संरक्षित करना
- एनबीटी 8: 2020 तक मानव के लिए आवश्यक पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं की पहचान और सुरक्षा करना
- एनबीटी 9: 2015 तक आनुवंशिक संसाधनों पर नागोया प्रोटोकॉल लागू करना
- एनबीटी 10: 2020 तक एक अद्यतन जैव विविधता कार्य योजना स्थापित करना
- एनबीटी 11: 2020 तक पारंपरिक जैव विविधता ज्ञान के संरक्षण को मजबूत करना
- एनबीटी 12: 2020 तक 2011-2020 जैव विविधता रणनीतिक योजना के लिए संसाधनों में वृद्धि करना

✓ लक्ष्य समय से पूर्व अर्जित

✓ लक्ष्य अर्जित

विज्ञानिक  
तकनीकी  
मानव



## छठी राष्ट्रीय रिपोर्ट (NR6)

सीबीडी के अनुच्छेद 6 और अनुच्छेद 26 के अनुसार, राष्ट्रीय जैव विविधता कार्य योजना (NBAP) या समान दस्तावेज़ तैयार करना और राष्ट्रीय रिपोर्ट्स जमा करना दो अनिवार्य कार्य हैं।

अब तक सदस्य देशों ने छह रिपोर्ट्स जमा करवाए हैं।

भारत ने 29 दिसंबर 2018 को सीबीडी को अपनी छठी राष्ट्रीय रिपोर्ट (NR 6) जमा की।

इससे भारत इसे करने वाले पहले देशों में शामिल है, विशेषकर जीव विविधता से समृद्ध देशों में।

→ **National Report 6**  
(NR6) भारत के 12 राष्ट्रीय जीव विविधता लक्ष्यों (NBTs) को पूरा करने में किए गए प्रगति को प्रदर्शित करता है।

रिपोर्ट की प्रमुख निष्कर्षों में शामिल हैं:

1. भारत का वन कवर बढ़ रहा है, जैसा कि 15 वें भारतीय वन राज्य रिपोर्ट (ISFR) 2017 में बताया गया है।
2. भारत ने दो NBTs को पार कर लिया है और आठ और प्राप्त करने में पूरी तरह ट्रैक पर है, बाकी दो लक्ष्यों के लिए भी प्रयास जारी हैं।
3. भारत के भूगोलीय क्षेत्र का अधिकतम 20% जैव विविधता संरक्षण के लिए समर्पित है, जो एचडी लक्ष्य 11 के स्थलीय घटक हिस्से को पार करता है।
4. 2015 से लेकर अब तक लगभग 75% अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र (IRCC) जारी करते हुए भारत ने ABS पर नागोया प्रोटोकॉल को कार्यात्मक बनाकर लाभ बाँटने (ABS) में महत्वपूर्ण प्रगति की है।
5. शेरों, हाथियों और एक सींग वाले भारतीय गैंडे की आबादी में वृद्धि हुई है, जिसमें गैंडे 20 वीं सदी की शुरुआत में लगभग लुप्त हो चुके थे।
6. भारत में दर्ज की गई प्रजातियों में से केवल 0.08% अति दुर्लभ हैं, जबकि वैश्विक स्तर पर 0.3% है।

+ वाक्य + हिम तेंदुआ .

7. खाद्य सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन को सुनिश्चित करने के लिए कृषि, मत्स्यपालन और वनों में सतत प्रबंधन उपाय लागू किए गए हैं। → *Green India Mission*
8. कृषि योग्य पौधों, पशुधन और उनके जंगली संबंधियों की आनुवंशिक विविधता को बनाए रखने के लिए कार्यक्रम चल रहे हैं।
9. जैव विविधता से संबंधित पारंपरिक ज्ञान की मान्यता देने और संरक्षण के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।



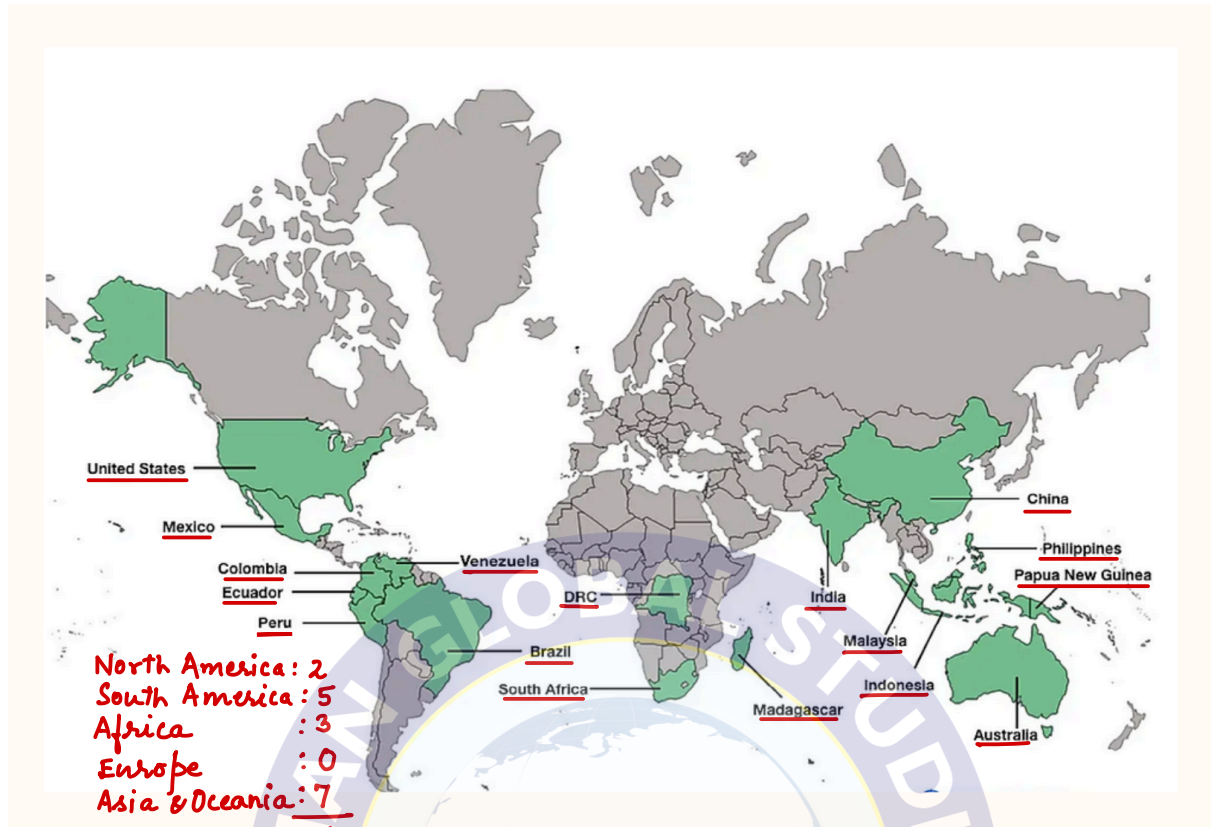
# भारत के जैव विविधता समृद्ध क्षेत्र - भारत के जैव भौगोलिक क्षेत्र, बायोस्फीयर रिजर्व

## भारत एक मेगाडाइवर्स देश के रूप में

- भारत, विश्व के 17 विशालविविध देशों में से एक, जैव विविधता और पारंपरिक ज्ञान से समृद्ध है।
- हालांकि यह दुनिया की केवल 2.4% भूमि पर फैला हुआ है, यह सभी ज्ञात प्रजातियों के 7-8% को शरण देता है।
- भारत के पास एक मजबूत संस्थागत, कानूनी और नीतिगत ढांचा है जो जैव विविधता के संरक्षण के लिए समर्पित है।
- 17 विशालविविध राष्ट्रों में पृथ्वी की अधिकांश प्रजातियाँ पायी जाती हैं, जिनमें कई स्थानिक प्रजातियाँ भी शामिल हैं।
- ये देश आमतौर पर उष्णकटिबंधीय या उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
- प्रमुख मानदंडों में 5,000 से अधिक स्थानिक पौधों की प्रजातियाँ और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र से निकटता शामिल हैं।

→ 52% of all species

Endemic Plants



## भारत के जैव भौगोलिक क्षेत्र

भारत के विविध इलाके और अद्वितीय स्थलाकृतिक विशेषताएं विभिन्न प्रकार की भूमि और जलीय पारिस्थितिक तंत्र बनाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप समृद्ध जैव विविधता संपोषित होती है।

एक अध्ययन ने उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक देश की विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर 10 बायोग्राफिकल जोन (BZs) की पहचान की है।

देश के 10 BZs में जंतुओं की 1,00,690 से अधिक प्रजातियों और वनस्पतियों की 47,800 से अधिक प्रजातियों को रिकॉर्ड किया गया है।

यह अध्ययन BZs के भीतर तीन अधीनस्थ स्तरों को भी पहचानता है:

① Biogeographical Region

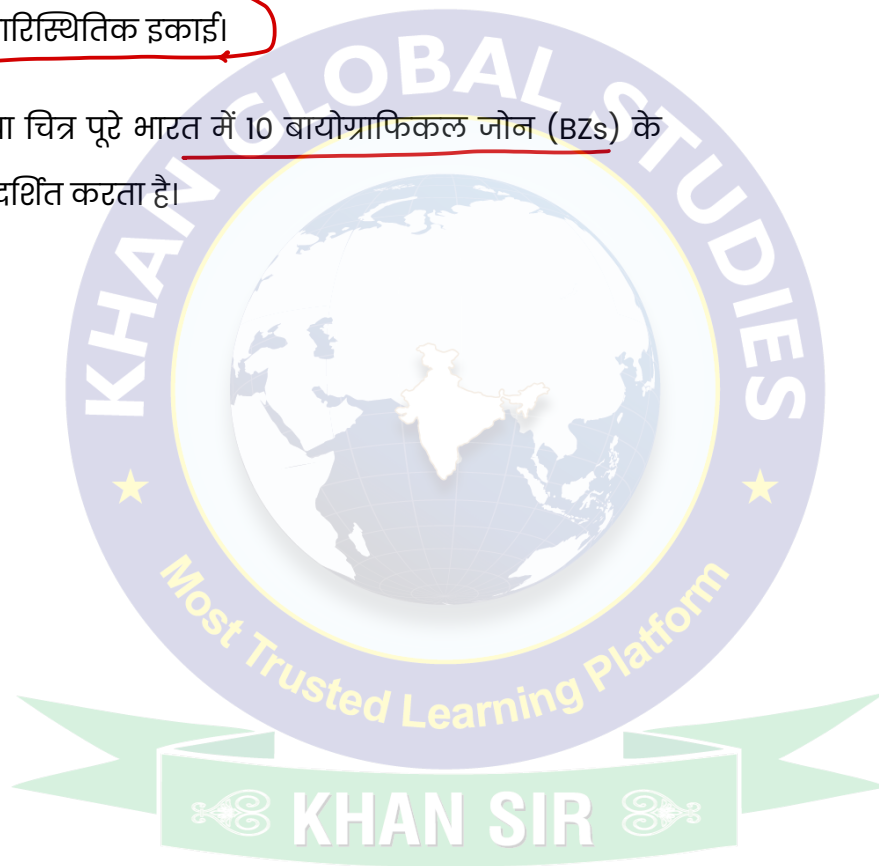
↳ प्रांत

↳ भू-आकृति क्षेत्र

↳ वायुमंडल

1. बायोटिक प्रांत - एक क्षेत्र के भीतर एक द्वितीयक इकाई, बाधाओं या पर्यावरणीय परिवर्तनों से अलग, जैसे, उत्तर पश्चिमी और पश्चिमी हिमालय।
2. भूमि क्षेत्र - एक प्रांत के भीतर एक तृतीयक इकाई, जो विभिन्न भू-आकृतियों को दर्शाती है, जैसे, गुजरात-रजवारा प्रांत में अरावली पर्वत और मालवा पठार।
3. बायोम - प्रत्येक क्षेत्र में एक दलदली या समशीतोष्ण वन जैसी एक पारिस्थितिक इकाई।

नीचे दिया गया चित्र पूरे भारत में 10 बायोग्राफिकल जोन (BZs) के वितरण को प्रदर्शित करता है।





## 1. ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र:

1. उच्च ऊंचाई, ठंडे और शुष्क पर्वतीय क्षेत्र
2. कई स्थानिक प्रजातियों के साथ विरल अल्पाइन वनस्पति
3. जंगली भेड़ और बकरी, हिम तेंदुआ, और प्रवासी काली गर्दन वाले क्रेन की बड़ी आबादी के लिए आवास

## 2. हिमालयी क्षेत्र:

1. इसमें दुनिया की कुछ सबसे ऊंची चोटियां शामिल हैं
2. भारल, इबेक्स, माखौर, हिमालयन तहर और ताकिन जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों का घर

## 3. भारतीय मरुस्थलीय क्षेत्र:

1. इसमें थार और कच्छ के रेगिस्तान शामिल हैं
2. वुल्फ, कैराकल, डेजर्ट कैट, हौबारा बस्टर्ड और ग्रेट इंडियन बस्टर्ड जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों का समर्थन करता है

## 4. अर्ध-शुष्क क्षेत्र:

1. पश्चिमी घाट के रेगिस्तान और घने जंगलों के बीच संक्रमण क्षेत्र
2. कृत्रिम और प्राकृतिक झीलों के साथ मौसमी रूप से अर्ध-शुष्क
3. शेर, करकल, सियार और भेड़िया जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों का घर

## 5. पश्चिमी घाट:

1. प्रमुख उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन क्षेत्रों और जैव विविधता हॉटस्पॉट में से एक

2. प्रायद्वीपीय भारत में पाई जाने वाली अधिकांश कशेरुक प्रजातियों का घर
3. नीलगिरि लंगूर, लायन टेल्ड मकाक, ग्रिजल्ड जाइंट स्क्विरेल और मालाबार सिवेट जैसी स्थानिक प्रजातियां

## 6. दक्कन का पठार:

1. भारत का सबसे बड़ा जैव भौगोलिक क्षेत्र
2. विविध वन्यजीव प्रजातियों वाला अर्ध-शुष्क क्षेत्र
3. *Tiger* चीतल, सांभर, नीलगाय, चौसिंघा और हाथी जैसी प्रजातियों का घर

## 7. गंगा का मैदान:

1. स्थलाकृतिक रूप से समरूप क्षेत्र
2. विशिष्ट जीवों में राइनो, हाथी, भैंस, दलदली हिरण, हॉग-हिरण और हिस्पीड खरगोश शामिल हैं।
3. भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 10.8%

## 8. उत्तर पूर्व क्षेत्र:

1. भारतीय, भारत-मलयन और भारत-चीनी जैव-भौगोलिक क्षेत्रों के बीच संक्रमण क्षेत्र
2. जैव विविधता हॉटस्पॉट (पूर्वी हिमालय) = *Indo Burma*
3. कई प्रजातियां खासी पहाड़ियों जैसे क्षेत्र या स्थानीय क्षेत्रों तक ही सीमित हैं  
 ↳ *Khasi Pine*  
*Pitcher Plant*

### 9. तटीय क्षेत्र:

1. भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.5%
2. रेतीले समुद्र तटों, मैंग्रोव, मिट्टी के फ्लैटों, प्रवाल भित्तियों और समुद्री एंजियोस्पर्म चरागाहों सहित विविध तटीय आवास
3. गुजरात से सुंदरबन तक 5,423 किमी लंबी तटरेखा

✓ मैंग्रोव } जैव-  
✓ प्रवाल भित्ति } विविधता  
समुद्र.

### 10. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह:

1. भारत में तीन उष्णकटिबंधीय नम सदाबहार वन क्षेत्रों में से एक
2. उच्च स्थानिकता और अद्वितीय वनस्पतियों और जीवों के केंद्र
3. नारकोंडम हॉर्नबिल और दक्षिण अंडमान क्रेट सहित स्थानिक द्वीप जैव विविधता

### बायोस्फीयर रिजर्व

1971 में लॉन्च किए गए यूनेस्को के मैन एंड द बायोस्फीयर प्रोग्राम (MAB) का उद्देश्य वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से लोगों और उनके पर्यावरण के बीच संबंधों में सुधार करना है।

बायोस्फीयर रिजर्व जैव विविधता के संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा देने के लिए यूनेस्को के मैन एंड द बायोस्फीयर प्रोग्राम (एमएबी) के तहत स्थापित संरक्षित क्षेत्र हैं। वे मनुष्यों और उनके पर्यावरण के बीच संबंधों को समझने और सतत विकास प्रथाओं को व्यावहारिक बनाने के लिए जीवित प्रयोगशालाओं के रूप में कार्य करते हैं।

बायोस्फीयर रिजर्व में तीन जुड़े हुए क्षेत्र होते हैं:

1. कोर क्षेत्र: परिदृश्य, पारिस्थितिक तंत्र, प्रजातियों और आनुवंशिक भिन्नता के संरक्षण के लिए कठोरता से संरक्षित पारिस्थितिकी तंत्र।
2. बफर जोन: मुख्य क्षेत्र के चारों ओर, पारिस्थितिक रूप से मान्य गतिविधियों की अनुमति देता है जो अनुसंधान, निगरानी, प्रशिक्षण और शिक्षा का समर्थन करते हैं।
3. ट्रांजिशन क्षेत्र: सबसे अधिक गतिविधि की अनुमति देता है, स्थायी आर्थिक और मानव विकास को बढ़ावा देता है।

ये क्षेत्र IUCN श्रेणी V संरक्षित क्षेत्रों के समान हैं।



✓ भारत में 18 बायोस्फीयर रिजर्व हैं।

यूनेस्को मैन एंड द बायोस्फीयर (एमएबी) कार्यक्रम सूची के आधार

✓ पर, अठारह बायोस्फीयर रिजर्व में से बारह बायोस्फीयर रिजर्व के विश्व नेटवर्क का हिस्सा हैं।

भारत में 18 बायोस्फीयर रिजर्व हैं।

यूनेस्को मैन एंड द बायोस्फीयर (एमएबी) कार्यक्रम सूची के आधार पर, अठारह बायोस्फीयर रिजर्व में से बारह बायोस्फीयर रिजर्व के विश्व नेटवर्क का हिस्सा हैं।

थाव

1 • 3 सबसे बड़े क्षेत्र वाले (क्रमवार)

2 • 3 " छोटे " " ( " )

3 • 3 सबसे पुराने ( " )

4 • 3 सबसे नये ( " )

5 • राज्य

6 • प्रमुख प्रजातियाँ

### 1. नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व (1986)

- स्थान: कनटक, तमिलनाडु और केरल
- पारिस्थितिकी तंत्र: पश्चिमी घाट
- प्रमुख प्रजातियाँ: नीलगिरि तहर, बाघ, सिंह-पूछ मकाक
- क्षेत्रफल: 5,520 वर्ग कि.मी

### 2. नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व (1988)

- स्थान: उत्तराखंड
- पारिस्थितिकी तंत्र: पश्चिमी हिमालय
- प्रमुख प्रजातियाँ: हिम तेंदुआ, हिमालयी काला भालू
- क्षेत्रफल: 5,860 वर्ग कि.मी

### 3. मन्जार की खाड़ी (1989)

- स्थान: तमिलनाडु
- पारिस्थितिकी तंत्र: तट
- प्रमुख प्रजातियाँ: डुर्गोंग
- क्षेत्र: 10,500 वर्ग किमी

### 4. नोकरेक (1988)

- स्थान: मेघालय
- पारिस्थितिकी तंत्र: पूर्वी पहाड़ियाँ
- प्रमुख प्रजातियाँ: लाल पांडा

- क्षेत्र: 820 वर्ग किमी

#### 5. सुंदरबन (1989)

- स्थान: पश्चिम बंगाल
- पारिस्थितिकी तंत्र: गंगा का डेल्टा
- प्रमुख प्रजातियाँ: रॉयल बंगाल टाइगर
- क्षेत्र: 9,630 वर्ग किमी

#### 6. मानस (1989)

- स्थान: असम
- पारिस्थितिकी तंत्र: पूर्वी पहाड़ियाँ  
→ *one horned Rhino-ceros*
- प्रमुख प्रजातियाँ: एशियाई हाथी, बाघ, असम छत वाला कछुआ, हिस्पिड खरगोश, गोल्डन लंगूर, पिग्मी हाँग
- क्षेत्रफल: 2,837 वर्ग कि.मी

#### 7. सिमलीपाल (1994)

- स्थान: ओडिशा
- पारिस्थितिकी तंत्र: डेक्कन प्रायद्वीप
- प्रमुख प्रजातियाँ: गौर, रॉयल बंगाल टाइगर, एशियाई हाथी
- क्षेत्र: 4,374 वर्ग किमी

#### 8. दिहांग-दिबांग (1998)

- स्थान: अरुणाचल प्रदेश

- पारिस्थितिकी तंत्र: पूर्वी हिमालय
- प्रमुख प्रजातियाँ: मिशमी ताकिन, कस्तूरी मृग
- क्षेत्र: 5,112 वर्ग किमी

#### 9. पचमढी बायोस्फीयर रिजर्व (1999)

- स्थान: मध्य प्रदेश
- पारिस्थितिकी तंत्र: अर्ध-शुष्क
- प्रमुख प्रजातियाँ: विशालकाय गिलहरी, उड़ने वाली गिलहरी
- क्षेत्र: 4,981.72 वर्ग किमी

#### 10. अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फीयर रिजर्व (2005)

- स्थान: मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़
- पारिस्थितिकी तंत्र: मैकला हिल्स
- प्रमुख प्रजातियाँ: चार सींग वाला मृग, भारतीय जंगली कुत्ता, सारस सारस, सफेद पूंछ वाला गिद्ध, सेक्रेड ग्रोव बुश फ्रॉग
- क्षेत्र: 3,835 वर्ग किमी

#### 11. कच्छ का महान रण (2008)

- स्थान: गुजरात
- पारिस्थितिकी तंत्र: रेगिस्तान
- प्रमुख प्रजातियाँ: भारतीय जंगली गधा

- क्षेत्र: 12,454 वर्ग किमी

### 12. कोल्ड डेजर्ट (2009)

- स्थान: हिमाचल प्रदेश
- पारिस्थितिकी तंत्र: पश्चिमी हिमालय
- प्रमुख प्रजातियाँ: हिम तेंदुआ
- क्षेत्र: 7,770 वर्ग किमी

### 13. कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान (2000)

- स्थान: सिक्किम
- पारिस्थितिकी तंत्र: पूर्वी हिमालय
- प्रमुख प्रजातियाँ: हिम तेंदुआ, लाल पांडा
- क्षेत्र: 2,620 वर्ग किमी

### 14. अगस्त्यमलाई बायोस्फीयर रिजर्व (2001)

- स्थान: केरल, तमिलनाडु
- पारिस्थितिकी तंत्र: पश्चिमी घाट
- प्रमुख प्रजातियाँ: नीलगिरी तहर, एशियाई हाथी
- क्षेत्र: 3,500.08 वर्ग किमी

### 15. ग्रेट निकोबार बायोस्फीयर रिजर्व (1989)

- स्थान: अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
- पारिस्थितिकी तंत्र: द्वीप
- प्रमुख प्रजातियाँ: खारे पानी का मगरमच्छ

- क्षेत्र: 885 वर्ग किमी

#### 16. डिब्रू-सैखोवा (1997)

- स्थान: असम
- पारिस्थितिकी तंत्र: पूर्वी पहाड़ियाँ
- प्रमुख प्रजातियाँ: सफेद पंखों वाली लकड़ी की बत्तख, पानी की भैंस, काली छाती वाली तोता, बाघ, कैप्ट लंगूर
- क्षेत्र: 765 वर्ग किमी

} one horned rhinoceros

#### 17. शेषचलम हिल्स (2010)

- स्थान: आंध्र प्रदेश
- पारिस्थितिकी तंत्र: पूर्वी पहाड़ियाँ
- प्रमुख प्रजातियाँ: पतला लोरिस
- क्षेत्र: 4,755.997 वर्ग किमी

#### 18. पन्ना (2011)

- स्थान: मध्य प्रदेश
- पारिस्थितिकी तंत्र: नम पर्णपाती वन
- प्रमुख प्रजातियाँ: बंगाल टाइगर, चिंकारा, नीलगाय, सांभर  
सांभर हिरण और स्लॉथ भालू
- क्षेत्र: 2,998.98 वर्ग किमी

यूनेस्को मैन एंड द बायोस्फीयर (एमएबी) कार्यक्रम सूची के आधार पर, अठारह बायोस्फीयर रिजर्व में से बारह बायोस्फीयर रिजर्व के विश्व नेटवर्क का हिस्सा हैं।

1. नीलगिरी बायोस्फीयर रिजर्व
2. मन्नार बायोस्फीयर रिजर्व की खाड़ी
3. सुंदरबन बायोस्फीयर रिजर्व
4. नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व
5. नोकरेक बायोस्फीयर रिजर्व
6. पचमढ़ी बायोस्फीयर रिजर्व
7. सिमलीपाल बायोस्फीयर रिजर्व
8. ग्रेट निकोबार बायोस्फीयर रिजर्व
9. अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फीयर रिजर्व
10. अगस्त्यमलाई बायोस्फीयर रिजर्व
11. खंगचेदजोंगा राष्ट्रीय उद्यान
12. पन्ना बायोस्फीयर रिजर्व

